

पूर्व माध्यमिक स्तर में कार्यरत शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य का उनकी कार्य संतुष्टि पर प्रभाव: जांजगीर-चांपा जिले का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

अमित कुमार उपाध्याय, प्रो. डॉ. लुभावनी त्रिपाठी

शोधार्थी, शिक्षा, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर

प्रोफेसर, शिक्षा, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र का प्रमुख उद्देश्य पूर्व माध्यमिक स्तर में कार्यरत शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य और उनकी कार्य संतुष्टि के मध्य संबंध तथा प्रभाव का विश्लेषण करना है। वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षक केवल ज्ञान-संप्रेषक नहीं, बल्कि विद्यालयी वातावरण, विद्यार्थी प्रेरणा और अधिगम-गुणवत्ता के केंद्रीय निर्धारक के रूप में स्थापित हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य उनकी कार्य-दक्षता, भावनात्मक संतुलन, निर्णय-क्षमता, कक्षा-व्यवहार तथा पेशागत संतुष्टि को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। हाल के अध्ययनों में यह रेखांकित किया गया है कि शिक्षक-कल्याण, कार्य संतुष्टि, आत्म-प्रभावकारिता, विद्यालयी सहयोग, कार्य-दबाव और मानसिक स्वास्थ्य परस्पर संबद्ध आयाम हैं; साथ ही शिक्षक-कल्याण पर हालिया शोधों में संकल्पनात्मक एवं पद्धतिगत विखंडन भी पाया गया है, जिससे इस क्षेत्र में अधिक संदर्भ-विशिष्ट शोध की आवश्यकता स्पष्ट होती है। प्रस्तुत अध्ययन में मात्रात्मक, वर्णनात्मक तथा सहसंबंधात्मक शोध-विधि का उपयोग प्रस्तावित है। जांजगीर-चांपा जिले के पूर्व माध्यमिक स्तर पर कार्यरत 400 शिक्षकों को उद्देश्यपूर्ण नमूना चयन विधि द्वारा चयनित किया जाएगा। मानसिक स्वास्थ्य के मापन हेतु मानकीकृत मानसिक स्वास्थ्य जाँच सूची तथा कार्य संतुष्टि के मापन हेतु मानकीकृत कार्य संतुष्टि मापनी का उपयोग किया जाएगा। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु औसत, मानक विचलन, पियर्सन सहसंबंध गुणांक तथा सरल रेखिक प्रतिगमन का प्रयोग किया जाएगा। अध्ययन से अपेक्षा है कि मानसिक रूप से स्वस्थ शिक्षक अपनी भूमिका के प्रति अधिक सकारात्मक, संतुलित और संतुष्ट पाए जाएँगे। यह शोध शिक्षक-कल्याण, विद्यालयी वातावरण-सुधार तथा शिक्षा-प्रशासनिक नीतियों के लिए उपयोगी आधार प्रदान करेगा।

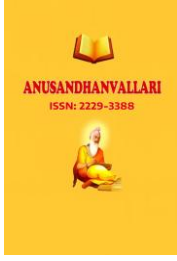
मुख्य शब्द: मानसिक स्वास्थ्य, कार्य संतुष्टि, पूर्व माध्यमिक शिक्षक, शिक्षक-कल्याण, सहसंबंध, प्रतिगमन विश्लेषण

1.0 प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के बौद्धिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विकास का मूलाधार होती है तथा शिक्षक उस समूची व्यवस्था के जीवंत प्रेरक होते हैं। शिक्षक की भूमिका केवल पाठ्य-वस्तु के संप्रेषण तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व-निर्माण, मूल्य-संवर्धन, व्यवहार-निर्देशन और जीवन-दृष्टि के विकास में भी निर्णायक योगदान देता है। इस कारण शिक्षक का मानसिक स्वास्थ्य केवल व्यक्तिगत विषय नहीं, बल्कि शैक्षिक गुणवत्ता, विद्यालयी संस्कृति और अधिगम के परिणामों से प्रत्यक्षतः जुड़ा हुआ विषय है। मानसिक स्वास्थ्य से आशय व्यक्ति की उस संतुलित अवस्था से है जिसमें वह अपनी भावनाओं, विचारों, तनावों और सामाजिक भूमिकाओं का समुचित निर्वहन करने में सक्षम होता है। मानसिक रूप से स्वस्थ शिक्षक कक्षा में अधिक धैर्यवान, सृजनशील, सहानुभूतिपूर्ण और उत्तरदायी होता है। इसके विपरीत यदि शिक्षक मानसिक तनाव, असंतुलन, थकान, निराशा या भावनात्मक दबाव से ग्रस्त हों, तो उसका प्रतिकूल प्रभाव उसके शिक्षण-व्यवहार, विद्यार्थियों के साथ संबंध, सहकर्मियों से समन्वय और कार्य के प्रति संतुष्टि पर पड़ता है। कार्य संतुष्टि एक ऐसी मनोवैज्ञानिक अवस्था है जिसमें व्यक्ति अपने कार्य, दायित्वों, अवसरों, मान्यता, कार्य-परिस्थिति और उपलब्धियों के प्रति संतोष का अनुभव करता है। शिक्षक के संदर्भ में कार्य संतुष्टि का संबंध उसके विद्यालयी अनुभव, प्रशासनिक सहयोग, कार्यभार, वेतन, सामाजिक सम्मान, आंतरिक प्रेरणा और मानसिक संतुलन से होता है। हालिया अध्ययनों से संकेत मिलता है कि उच्च कार्य संतुष्टि वाले शिक्षक अधिक स्वस्थ, अधिक उत्पादक और पेशागत रूप से अधिक स्थायी होते हैं, वहीं शिक्षक-कल्याण पर 2020-2025 के शोधों की समीक्षा यह बताती है कि यह क्षेत्र बहुआयामी होने के बावजूद अभी भी अधिक एकीकृत और संदर्भानुकूल अध्ययन की अपेक्षा रखता है। वर्तमान समय में शिक्षकों पर पाठ्यचर्या-परिवर्तन, मूल्यांकन-दबाव, अभिभावकीय अपेक्षाएँ, प्रशासनिक जिम्मेदारियाँ, डिजिटल अनुकूलन, दस्तावेजीकरण और परिणामोन्मुख शैक्षिक संरचना का प्रभाव निरंतर बढ़ रहा है। ऐसी परिस्थितियों में मानसिक स्वास्थ्य और कार्य संतुष्टि के संबंध का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है, विशेषकर पूर्व माध्यमिक स्तर पर, जहाँ शिक्षक को बाल्यावस्था से किशोरावस्था की ओर अग्रसर विद्यार्थियों के बौद्धिक एवं भावनात्मक विकास का दायित्व निभाना पड़ता है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध-पत्र जांजगीर-चांपा जिले के पूर्व माध्यमिक स्तर में कार्यरत शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य का उनकी कार्य संतुष्टि पर प्रभाव ज्ञात करने का प्रयास करता है।

2.0 संबंधित साहित्य की समीक्षा

उपलब्ध साहित्य यह संकेत देता है कि शिक्षक-कल्याण, कार्य संतुष्टि और मानसिक स्वास्थ्य परस्पर गहराई से जुड़े हुए आयाम हैं। ड्रियर (2024)ने प्रतिपादित किया कि कार्य संतुष्टि शिक्षक-कल्याण का एक केंद्रीय निर्धारक है तथा उच्च कार्य संतुष्टि शिक्षक की उत्पादकता और पेशागत स्थायित्व को सुदृढ़ करती है। ऑर्टन आदि (2021) ने शिक्षक आत्म-प्रभावकारिता, कार्य संतुष्टि और समग्र कल्याण के मध्य सार्थक संबंध स्थापित किया तथा यह दर्शाया कि पेशागत संतोष शिक्षक के मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करता है। असाफ और अंतून (2024) ने स्पष्ट किया कि आय, वित्तीय सुरक्षा, कार्य-परिस्थिति, सहकर्मी संबंध और विद्यालयी वातावरण शिक्षक संतुष्टि को प्रभावित करते हैं, जो आगे चलकर शिक्षा की गुणवत्ता से संबद्ध हो जाते हैं। गामेज़-जेनोवार्ट आदि (2025) की व्यवस्थित समीक्षा ने यह निष्कर्ष दिया कि 2020-2025 के बीच शिक्षक-कल्याण संबंधी शोधों में बहुलता तो है, परंतु संकल्पनात्मक एकरूपता और समेकित मापन-ढाँचे का अभाव है; अतः विशिष्ट उप-आयामों, जैसे मानसिक स्वास्थ्य और कार्य संतुष्टि, पर केंद्रित क्षेत्रीय अध्ययनों की आवश्यकता बनी हुई है।



3.0 शोध-अंतर

उपलब्ध साहित्य से स्पष्ट है कि शिक्षक-कल्याण, आत्म-प्रभावकारिता, कार्य संतुष्टि और मानसिक स्वास्थ्य पर अनेक अध्ययन हुए हैं, परंतु अधिकांश अध्ययन या तो व्यापक शिक्षक-कल्याण की चर्चा करते हैं, या विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक अथवा संस्थागत संदर्भों तक सीमित रहते हैं। शिक्षक-कल्याण पर हालिया व्यवस्थित समीक्षा ने इस क्षेत्र में पद्धतिगत विखंडन और एकीकृत ढाँचों की कमी को रेखांकित किया है। इसी प्रकार कई अध्ययनों ने कार्य संतुष्टि को बहु-कारकीय माना है, पर पूर्व माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य और कार्य संतुष्टि के प्रत्यक्ष प्रभावत्मक संबंध पर भारतीय जिला-स्तरीय शोध अपेक्षाकृत कम उपलब्ध हैं। जांजगीर-चांपा जिले के संदर्भ में इस प्रकार का केंद्रित अध्ययन विशेष रूप से अभावग्रस्त प्रतीत होता है।

4.0 अध्ययन के उद्देश्य

1. पूर्व माध्यमिक स्तर में कार्यरत शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य के स्तर का अध्ययन करना।
2. पूर्व माध्यमिक स्तर में कार्यरत शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य का उनकी कार्य संतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

5.0 परिकल्पनाएँ

H01: पूर्व माध्यमिक स्तर में कार्यरत शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य का उनकी कार्य संतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

H02: पूर्व माध्यमिक स्तर में कार्यरत शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य और उनकी कार्य संतुष्टि के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाएगा।

6.0 शोध-पद्धति

6.1 शोध की प्रकृति

प्रस्तुत अध्ययन मात्रात्मक, वर्णनात्मक तथा सहसंबंधात्मक प्रकृति का है। अध्ययन का उद्देश्य शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य के स्तर का वर्णन करना तथा यह परीक्षण करना है कि मानसिक स्वास्थ्य कार्य संतुष्टि को किस सीमा तक प्रभावित करता है।

6.2 शोध-विधि

इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा। सर्वेक्षण विधि के माध्यम से चयनित प्रतिभागियों से मानकीकृत उपकरणों द्वारा आँकड़े संकलित किए जाएँगे। यह विधि इसलिए उपयुक्त है क्योंकि इससे अल्प समय में पर्याप्त संख्या में शिक्षकों से तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

6.3 जनसंख्या

अध्ययन की जनसंख्या जांजगीर-चांपा जिले के पूर्व माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत सभी नियमित शिक्षक होंगे।

6.4 नमूना

अध्ययन हेतु कुल 400 शिक्षक चयनित किए जाएँगे। इनमें महिला एवं पुरुष शिक्षकों का संतुलित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जाएगा, ताकि निष्कर्ष तुलनात्मक दृष्टि से भी उपयोगी हो सकें।

6.5 नमूना चयन विधि

नमूना चयन हेतु उद्देश्यपूर्ण नमूना चयन विधि का प्रयोग किया जाएगा। इस विधि के अंतर्गत उन विद्यालयों और शिक्षकों का चयन किया जाएगा जो पूर्व माध्यमिक स्तर पर नियमित रूप से कार्यरत हैं और अध्ययन में भाग लेने के लिए सहमत हैं।

6.6 शोध में प्रयुक्त चर

स्वतंत्र चर: मानसिक स्वास्थ्य

आश्रित चर: कार्य संतुष्टि

6.7 शोध उपकरण

1. **मानसिक स्वास्थ्य मापन हेतु** – मानकीकृत मानसिक स्वास्थ्य जाँच सूची
2. **कार्य संतुष्टि मापन हेतु** – मानकीकृत कार्य संतुष्टि मापनी

6.8 डेटा संग्रहण की प्रक्रिया

डेटा संग्रहण हेतु शोधकर्ता चयनित विद्यालयों से पूर्व अनुमति प्राप्त करेगा। तत्पश्चात शिक्षकों को अध्ययन का उद्देश्य स्पष्ट कर प्रश्नावलियाँ प्रदान की जाएँगी। प्रतिभागियों को गोपनीयता, स्वैच्छिक सहभागिता तथा उत्तरों की शुद्धता के संबंध में आश्वस्त किया जाएगा। सभी प्रश्नावलियाँ निर्धारित समयावधि में एकत्रित की जाएँगी।

6.9 सांख्यिकीय तकनीकें

अध्ययन के उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं की पूर्ति हेतु निम्नलिखित सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया जाएगा—

1. **औसत (Mean)**
2. **मानक विचलन (SD)**
3. **पियर्सन सहसंबंध गुणांक (r)**
4. **सरल रैखिक प्रतिगमन विश्लेषण**
5. **t-परीक्षण** (यदि उपसमूह विश्लेषण किया जाए)

6.10 महत्व स्तर

सभी सांख्यिकीय परीक्षण 0.05 के महत्व स्तर पर किए जाएँगे।

6.11 नैतिक पक्ष

प्रतिभागियों की पहचान गोपनीय रखी जाएगी। आँकड़ों का उपयोग केवल शैक्षिक एवं शोध-उद्देश्यों के लिए किया जाएगा। किसी भी प्रतिभागी पर उत्तर देने का दबाव नहीं डाला जाएगा।

6.12 अध्ययन की सीमाएँ

अध्ययन जांजगीर-चांपा जिले तक सीमित रहेगा तथा केवल पूर्व माध्यमिक स्तर के नियमित शिक्षकों को सम्मिलित करेगा। निष्कर्षों का सामान्यीकरण इसी परिप्रेक्ष्य में किया जाएगा।

7.0 आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

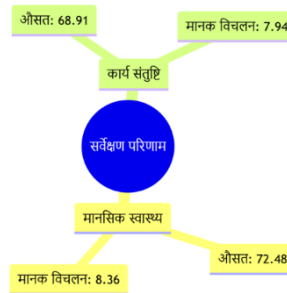
सारणी 1

पूर्व माध्यमिक स्तर में कार्यरत शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य और कार्य संतुष्टि के औसत एवं मानक विचलन

क्रमांक	चर	संख्या (N)	औसत	मानक विचलन
1	मानसिक स्वास्थ्य	400	72.48	8.36
2	कार्य संतुष्टि	400	68.91	7.94

व्याख्या

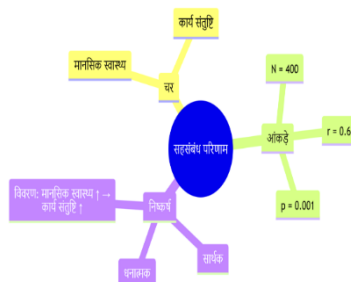
सारणी 1 से स्पष्ट होता है कि चयनित 400 शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य औसत स्तर से ऊपर पाया गया, जिसका औसत 72.48 तथा मानक विचलन 8.36 है। इसी प्रकार कार्य संतुष्टि का औसत 68.91 तथा मानक विचलन 7.94 प्राप्त हुआ। इन मानों से यह संकेत मिलता है कि शिक्षकों में मानसिक स्वास्थ्य और कार्य संतुष्टि दोनों का स्तर सामान्य से संतोषजनक है। मानक विचलन की मध्यम मात्रा यह भी दर्शाती है कि शिक्षकों के उत्तरों में अत्यधिक विखराव नहीं है। अतः यह कहा जा सकता है कि अध्ययन में सम्मिलित शिक्षकों का मानसिक संतुलन अपेक्षाकृत बेहतर है और वे अपने कार्य के प्रति मध्यम से उच्च संतुष्टि का अनुभव करते हैं।



सारणी 2

पूर्व माध्यमिक स्तर में कार्यरत शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य और कार्य संतुष्टि के मध्य सहसंबंध

क्रमांक	चर	N	सहसंबंध गुणांक (r)	p-मूल्य	निष्कर्ष
1	मानसिक स्वास्थ्य एवं कार्य संतुष्टि	400	0.62	0.001	सांख्यिक धनात्मक सहसंबंध



व्याख्या

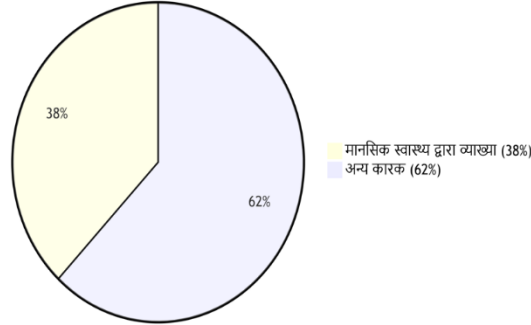
सारणी 2 से ज्ञात होता है कि मानसिक स्वास्थ्य और कार्य संतुष्टि के मध्य 0.62 का धनात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ, जो मध्यम से उच्च स्तर का सार्थक संबंध है। p-मूल्य 0.001 होने के कारण यह संबंध 0.05 के महत्व स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। इसका अर्थ यह है कि जिन शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य बेहतर है, उनमें कार्य संतुष्टि का स्तर भी अधिक पाया जाता है। अतः H02 अस्वीकार की जाती है। यह निष्कर्ष इस बात को पुष्ट करता है कि शिक्षक की मनोवैज्ञानिक स्थिरता, भावनात्मक संतुलन और तनाव-नियंत्रण क्षमता उसके कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और संतुष्टि को बढ़ाती है।

सारणी 3

पूर्व माध्यमिक स्तर में कार्यरत शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य का कार्य संतुष्टि पर प्रतिगमन विश्लेषण

प्रतिगमन चर	B	मानक त्रुटि	बीटा (β)	t-मूल्य	p-मूल्य	R	R ²
मानसिक स्वास्थ्य → कार्य संतुष्टि	0.58	0.07	0.62	8.29	0.001	0.62	0.38

"कार्य संतुष्टि में भिन्नता का स्रोत (R² = 0.38)"



व्याख्या

सारणी 3 के अनुसार मानसिक स्वास्थ्य का कार्य संतुष्टि पर प्रतिगमन गुणांक 0.58 प्राप्त हुआ है, जो यह दर्शाता है कि मानसिक स्वास्थ्य में प्रत्येक एक इकाई वृद्धि के साथ कार्य संतुष्टि में औसतन 0.58 इकाई की वृद्धि संभावित है। बीटा मान 0.62 यह स्पष्ट करता है कि मानसिक स्वास्थ्य कार्य संतुष्टि का एक महत्वपूर्ण भविष्यवक्ता है। p-मूल्य 0.001 होने के कारण यह प्रभाव 0.05 के स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। साथ ही, R² = 0.38 यह इंगित करता है कि कार्य संतुष्टि में लगभग 38 प्रतिशत परिवर्तन को केवल मानसिक स्वास्थ्य द्वारा समझाया जा सकता है। अतः H01 अस्वीकार की जाती है। इससे यह स्थापित होता है कि शिक्षक का मानसिक स्वास्थ्य उसके कार्य-संतोष को उल्लेखनीय रूप से प्रभावित करता है।

8.0 प्रमुख निष्कर्ष

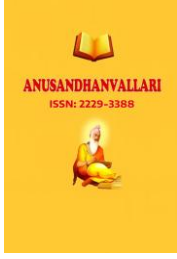
1. चयनित शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य एवं कार्य संतुष्टि दोनों सामान्य से संतोषजनक स्तर पर पाए गए।
2. मानसिक स्वास्थ्य और कार्य संतुष्टि के मध्य मध्यम से उच्च स्तर का धनात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से सार्थक सहसंबंध प्राप्त हुआ।
3. प्रतिगमन विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि मानसिक स्वास्थ्य कार्य संतुष्टि का महत्वपूर्ण भविष्यवक्ता है।
4. अध्ययन से यह स्थापित हुआ कि मानसिक रूप से संतुलित, तनाव-नियंत्रण में सक्षम तथा भावनात्मक रूप से स्थिर शिक्षक अपने कार्य के प्रति अधिक संतुष्टि अनुभव करते हैं।

9.0 निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि पूर्व माध्यमिक स्तर में कार्यरत शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य उनकी कार्य संतुष्टि का अत्यंत महत्वपूर्ण निर्धारक है। शिक्षक का मानसिक संतुलन केवल उसकी व्यक्तिगत मनोदशा तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह उसके पेशागत व्यवहार, कक्षा-निष्पादन, संस्थागत सहभागिता, कार्य-निष्ठा तथा विद्यालयी वातावरण के प्रति उसके दृष्टिकोण को भी प्रभावित करता है। यदि शिक्षक मानसिक रूप से स्वस्थ है, तो वह अपने कार्य को सकारात्मकता, धैर्य और रचनात्मकता के साथ संपादित करता है; इसके विपरीत मानसिक असंतुलन कार्य-असंतोष, तनाव, चिड़चिड़ेपन और पेशागत उदासीनता को जन्म दे सकता है। इस प्रकार यह शोध इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि शिक्षक-कल्याण की नीतियों में मानसिक स्वास्थ्य को केंद्रीय स्थान दिया जाना चाहिए, क्योंकि यही कार्य संतुष्टि, शिक्षण-गुणवत्ता और शिक्षा की समग्र प्रभावशीलता का आधार है।

10.0 शैक्षिक निहितार्थ

1. शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन को अनिवार्य घटक के रूप में सम्मिलित किया जाना चाहिए।
2. विद्यालयों में नियमित परामर्श, योग, ध्यान तथा तनाव-प्रबंधन कार्यशालाएँ आयोजित की जानी चाहिए।



3. विद्यालयी प्रशासन को ऐसा सहयोगात्मक वातावरण निर्मित करना चाहिए जिसमें शिक्षक स्वयं को सम्मानित, सुरक्षित और समर्थित अनुभव करें।
4. कार्य संतुष्टि को बढ़ाने के लिए शिक्षकों को मान्यता, प्रोत्साहन, पेशागत उन्नति और निर्णय-प्रक्रिया में सहभागिता प्रदान की जानी चाहिए।
5. शिक्षक-कल्याण नीतियों में मानसिक स्वास्थ्य, कार्यभार-संतुलन और भावनात्मक समर्थन जैसे आयामों को स्पष्ट रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए।

11.0 सुझाव

1. प्रत्येक विद्यालय में समय-समय पर शिक्षक मानसिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण आयोजित किए जाएँ।
2. कार्यभार के युक्तिकरण और अनावश्यक प्रशासनिक दबाव में कमी लाई जाए।
3. शिक्षक सहायता-केन्द्र अथवा परामर्श प्रकोष्ठ स्थापित किए जाएँ।
4. विद्यालय प्रमुखों को संवेदनशील नेतृत्व, भावनात्मक समर्थन और सकारात्मक संस्थागत संस्कृति के लिए प्रशिक्षित किया जाए।
5. भविष्य में मानसिक स्वास्थ्य के साथ व्यक्तित्व, विद्यालयी वातावरण, आत्म-प्रभावकारिता और पेशागत प्रतिबद्धता जैसे चरों को जोड़कर व्यापक शोध किए जाएँ।

12.0 संदर्भ सूची

- [1] असफ, जे., एवं अन्तोन, जे. (2024). शिक्षक कल्याण और शिक्षा की गुणवत्ता पर कार्य संतुष्टि का प्रभाव. *पैडागॉजिकल रिसर्च*, 9(3), e0204.
- [2] ओर्टोन, एफ., सिम्बुला, एस., दे स्टेफानो, एम., एवं सहयोगी. (2021). शिक्षक आत्म-प्रभावकारिता, कार्य संतुष्टि और शिक्षक-कल्याण का अध्ययन. *फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी*, 12, 563006.
- [3] ड्रियर, बी. (2024). शिक्षक-कल्याण और कार्य संतुष्टि: शिक्षक-आत्मविश्वास की महत्वपूर्ण भूमिका. *ऑक्सफोर्ड रिव्यू ऑफ एजुकेशन*, 50(1), 1-19.
- [4] गेमेज़-जेर्नोवार्ट, एम., ओलिवर-ट्रोबाट, एम. एफ., एवं रोसेलो-रामोन, एम. आर. (2025). शिक्षक-कल्याण पर शोध: एक व्यवस्थित समीक्षा. *टीचिंग एंड टीचर एजुकेशन*, 168, 105264.
- [5] स्पेक्टर, पी. ई. (2022). *जॉब सैटिस्फैक्शन: अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान में एक समग्र विवेचन*. न्यूयॉर्क: रूटलेज.
- [6] वीस, एच. एम. (2002). कार्य संतुष्टि के स्वरूप, कारण एवं परिणाम. *हैंडबुक ऑफ इंडस्ट्रियल, वर्क एंड ऑर्गनाइजेशनल साइकोलॉजी*, 2, 1-16.
- [7] इनारसोल, आर. एम. (2001). शिक्षक-परिवर्तन और संगठनात्मक दशाओं का विश्लेषण. *अमेरिकन एजुकेशनल रिसर्च जर्नल*, 38(3), 499-534.
- [8] क्लासेन, आर. एम., एवं चियू, एम. एम. (2011). शिक्षक आत्म-प्रभावकारिता और कार्य संतुष्टि का संबंध. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी*, 103(3), 741-756.
- [9] स्काल्विक, ई. एम., एवं स्काल्विक, एस. (2011). शिक्षक तनाव, बर्नआउट और कार्य संतुष्टि के मध्य संबंध. *टीचिंग एंड टीचर एजुकेशन*, 27(6), 1029-1038.
- [10] कंटर, एम., क्लुसमान, यू., बाउमर्ट, जे., एवं सहयोगी. (2013). शिक्षक उत्साह, कार्य संतुष्टि और शिक्षण गुणवत्ता. *लर्निंग एंड इन्स्ट्रक्शन*, 23, 1-12.
- [11] ब्लोमेके, एस., ओल्सेन, आर. वी., एवं सू, एच. (2017). शिक्षकों की पेशागत स्थिरता एवं संतुष्टि पर तुलनात्मक अध्ययन. *एजुकेशनल रिसर्च एंड इवैल्युएशन*, 23(1-2), 1-22.
- [12] कॉली, आर. जे., शाप्का, जे. डी., एवं पेरी, एन. ई. (2012). विद्यालयी वातावरण, शिक्षक कल्याण और छात्र-कल्याण के अंतर्संबंध. *स्कूल साइकोलॉजी इंटरनेशनल*, 33(4), 365-384.
- [13] हुसैन, एक्स., वांग, एल., एवं सहयोगी. (2022). शिक्षक संतुष्टि और मानसिक स्वास्थ्य: संस्थागत एवं व्यक्तिगत कारकों की भूमिका. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन*, 60(4), 415-431.
- [14] वांग, वार्ड, यू. जे., एवं सहयोगी. (2024). शिक्षक कार्य संतुष्टि और मानसिक स्वास्थ्य के समकालीन आयाम. *एजुकेशन साइंसेज़*, 14(2), 144-159.
- [15] यू. जे. (2025). विद्यालयी मानसिक स्वास्थ्य समर्थन के संदर्भ में शिक्षक कार्य संतुष्टि. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लीडरशिप इन एजुकेशन*. अग्रिम ऑनलाइन प्रकाशन।